यूज किए गए है जिसकी वजह से मैंने विशेषाधिकार प्रस्ताव की सूचना आपको दी। मेरे पास इसकी फोटो स्टैट कापी है। आप चाहेंगे तो मैं उसको पेश कर दूंगा।

**श्री सभापति :** रूल यह है कि अगर कोई डाकुमैन्ट फैक्ट्स पर हैं तो देने चाहिएं।

**श्री भैरों सिंह शेखावत :** अगर आपकी इजाजत हो तो मैं उसको पढ़ दूं। ज्यादा टाइम नहीं लगेगा।

"Respected Sir,

As desired, I have succeeded in passing the Resolution in the Committee meeting on the 29th April, 1974. Luckily, only one out of the three from the other side attended. He raised certain objections which were overruled by me. His main objection was that the Lt. Governor and the Managing Committee have no moral authority to have any further hold on the Society . . ."

इसमें मोस्ट आबजेक्शनेबल पोर्शन पढ़ कर सुना रहा हूं :–

"I have assessed the situation and feel that it will not be possible for me and the Committee to accept the position in view of the Court's attitude and its further exploitation in the Parliament and the papers, unless full support from the Police and the Registrar is afforded. The new 60 members can remain in if I am there . . ."

मैं आगे और पढ़ देता हूं :

"It is good that the Parliament closes on or before the 13th May, 1974."

उसने बालेश्वर प्रसाद जी को चिट्ठी लिखी है. . .

**श्री सभापति :** आप वह जब मुझे देंगे तो मैं उसको पढ़ कर कंसिडर करूंगा। आप बगैर मेरे कंसिडर किए हुए, बगैर मेरी इजाजत के, यह सवाल रेज नहीं कर सकते।

**श्री भैरों सिंह शेखावत :** मैं सवाल इसलिए उठा रहा हूं कि कहीं फोटोस्टैट कापी देने में विलम्ब हो जाए

**श्री सभापति :** आपने मेन्शन कर दिया। मैंने आप से कहा डाक्यूमेंट लाइए। जब डाक्यूमेंट आएगा तब मैं कंसिडर करूंगा।

**श्री राजनारायण** (उत्तर प्रदेश): यह गंभीर विषय है। चेयर का अपमान है।

[**Mr. Deputy Chairman** in the Chair.]

## REFERENCE TO DEMAND FOR A STATEMENT ON THE SITUATION ARISING OUT OF THE RAILWAY STRIKE.

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): Sir, I am on a point of order.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: What is the point of order? On what issue are you rising on a point of order?

SHRI NIREN GHOSH: The point of order is this: Yesterday, Sir, when you yourself were there in the Chair, though you did not give a direction to the Government, you expressed a clear desire from the Chair that the Government should come out before the House with a statement on the railway strike which has been total and which has been hundred per cent and Mr. Bery, the great liar, is dishing out lies . . . **(Interruptions).** . . Now, Sir, since you expressed a desire, though you did not give a direction to the Government, the Government should come out with a statement on the situation now.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, I expressed the desire. But let me tell you now one thing.

SHRI NIREN GHOSH: The Government has not come out with a statement and the Chair has, therefore, been treated with contempt by the Government.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Let me tell you one thing. We have admitted today a calling-attention motion on this and it will be coming tomorrow for discussion.

SHRI NIREN GHOSH: :We do not want it tomorrow morning . . . (**Interruptions**). Tomorrow morning we do not want it.

SHRI BHUPESH GUPTA (West Bengal): Sir, I am very glad that it is coming. Let it come.

SHRI NIREN GHOSH: No, not tomorrow.

SHRI BHUPESH GUPTA: Just a minute, Mr. Niren Ghosh. Let it come tomorrow. Nothing should be done today. I think the. . . .

*SHRI NIREN GHOSH: Not tomorrow.* Let it be on Saturday.

SHRI BHUPESH GUPTA: I think the honourable Minister should make a statement on the situation because they have been bluffing the country and the Parliament. . . (Interruptions). . .

SHRI NIREN GHOSH: Hundreds of railway workers have been arrested.

DR. K. MATHEW KURIAN (Kerala): Hundreds of people have been arrested and large-scale arrests are going on . . . (**Interruptions**). . . The AIR is blacking out the whole thing.

SHRI BHUPESH GUPTA: Just a minute, please. They have been, Sir, bluffing the country and the Parliament and said that there would not be any strike. Now they should tell us about the situation. Why I say this is that there is a difference between making a statement here and making a statement outside.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Tomorrow you can raise this when there is going to be a discussion on this.

SHRI BHUPESH GUPTA: No, Sir. Making a statement outside is one thing and making a statement inside the House on the situation is another thing. You know what happens when they make such statements inside the House? When they say such things inside the House, they are always open to the charge of lying to the Parliament and you know what happens when the Minister lies to the Parliament. I would like the honourable Minister to own up what he has stated in this connection.

**श्री रवी राय** (उड़ीसा) : श्रीमन्, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि टैरीटोरियल आर्मी की पांच यूनिट्स को रेलों को चलाने के काम में लगाया गया है। ये यूनिट्स इस प्रकार से लगाई गई है। दो यूनिट्स तो साउथ ईस्टर्न रेलवे में लगाई गई है, 2 साउथ सेन्ट्रल रेलवे में। और दो नार्थन रेलवे में लगाई गई है। हर कम्पनी में करीब 150 आदमी होते हैं। उन लोगों का कहना है कि उन्हें जो ट्रेनिंग दी गई है वह केवल मैकिनकल ट्रेनिंग दी गई है और उन्हें रोड यानी पटरियों में गाड़ी चलाने का तजुर्बा नहीं है। इस तरह से उन लोगों ने काम करने से इंकार कर दिया है और उन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इसलिए मैं चाहता हूं कि सरकार इस टैरीटोरियल आर्मी का प्रयोग रेलवे स्ट्राइक को दबाने में प्रयोग न करे।

**श्री लाल आडवाणी** (दिल्ली) : श्रीमन्, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि जनता को रेलवे स्ट्राइक से जो कष्ट हो रहा है, उसको अधिकारीगण न होने के बराबर बतला रहे हैं और उनकी ओर से कहा जा रहा है कि ट्रेनें चल रही हैं। लेकिन वास्तविकता यह है कि अधिकांश ट्रेनें बन्द हैं। श्रीमन्, लोग स्टेशनों में जाते हैं, लेकिन उन्हें वहां पर टिकट नहीं मिलता है। ऐसे लोग भी हैं जो रिफन्ड लेने के लिए वहां पर जाते हैं, लेकिन उन्हें भी रिफन्ड नहीं मिलता है क्योंकि वहां पर तो सब जगह पर स्ट्राइक चल रही है। कलकत्ते से जो खबर आई है उससे मालूम होता है कि वहां पर सब रेलों का चलना बन्द हो गया है, लेकिन सरकारी वक्तव्य यह कहता है कि सब रेलें चल रही हैं।

**श्री लाल आडवाणी** : सरकार द्वारा जो भी वक्तव्य रेल हड़ताल के सम्बन्ध में प्रकाशित किये जा रहे हैं वे बिल्कुल असत्य हैं। सरकार का कहना है कि ट्रेनें चल रही हैं लेकिन जहां तक हमारी जानकारी है, अधिकांश ट्रेनें बन्द पड़ी हुई हैं।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, Mr. Yogendra Sharma.

**THE FINANCE BILL, 1974**—contd.

**श्री योगेन्द्र शर्मा** (बिहार) : हम लोगों के सामने जो वित्त विधेयक है . . .

**श्री राजनारायण** (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, क्या वे वित्त विधेयक पर बोलने लगे हैं । मैंने तो आप से रेलवे के सम्बन्ध में बोलने के लिए निवेदन किया था ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I have called Mr. Sharma to speak on the Bill.

**श्री राजनारायण** : मैं रेलवे के सम्बन्ध में कहना चाहता था, लेकिन आपने मुझे समय नहीं दिया ।

**श्री उपसभापति** : आप कल बोलियेगा ।

**श्री राजनारायण** : न्याय के सम्बन्ध में देरी नहीं होनी चाहिए क्योंकि जितनी देरी इस सम्बन्ध में की जायेगी उतना ही अन्याय ज्यादा होगा ।

**श्री उपसभापति** : कल स्टेटमेंट होगा और उस समय जो बोलना चाहें, बोलियेगा ।

**श्री राजनारायण** : श्रीमन्, जब देश में इतनी बड़ी घटना हो रही हो, सारे देश में जब ट्रेनें बन्द पड़ी हैं और सरकार की ओर से इतना भारी असत्य बोला जा रहा हो कि ट्रेनें चल रही हैं, तो ऐसे समय में श्री ललित नारायण मिश्र का इस्तीफा होना चाहिये ।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Tomorrow you can raise all these points. . . .

SHRI NIREN GHOSH (West Bengal): We want it on Saturday . . . (*Interruptions*).

**श्री योगेन्द्र शर्मा** (बिहार) : उप-सभापति जी यह जो वित्त विधेयक है, उसके द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों से—आम जनता पर तमाम विकास का जो बोझा डाला गया है तथा ईजारेदारों को नई-नई सुविधा और नई-नई रियायतें देने की जो सरकार की नीति है, वह दक्षिण पंथी रुझान का द्योतक है ।

उप-सभापति जी, जो विधेयक प्रस्तुत किया गया है, जो प्रस्ताव हमारे सामने हैं, उनसे मालूम होता है कि अभी हमारे देश के सामने जो भीषण आर्थिक संकट है उसका न सरकार के पास कोई निदान ही है और न ही उसको इस बात का एहसास ही है । इसका परिणाम यह हो रहा है कि यह जो आर्थिक संकट है, वह और भी गहरा होता चला जा रहा है और हो गया है । यह इसी दक्षिण पंथी रुझान का ही नतीजा है कि देश के आर्थिक जीवन को, जिस को देश की लाइफ लाइन कहते हैं, वह रेलवे व्यवस्था आज ठप्प पड़ी हुई है । मैं इस समय रेलवे की हड़ताल की बात नहीं करना चाहता हूं, लेकिन यदि रेलवे की हड़ताल से देश की आर्थिक व्यवस्था, देश की लाइफ लाइन ठप्प हो जाय, ठप्प है, तो फिर क्या इसका यह मतलब नहीं है कि आपकी जो नीतियां हैं उन्होंने इस तरह की परिस्थिति पैदा कर दी है कि हमारे देश के सामने जो आर्थिक संकट इस समय खड़ा है, वह सुलझने के वजाय और भी अधिक गहरा हो गया है ।

आज देश की लाइफ लाइन ठप्प पड़ जाने का मुख्य कारण आपकी दक्षिण पंथी रुझान का ही नतीजा है । हम जानते हैं और अक्सर कहा जाता है कि जो संगठित मजदूर है, वे अपने संगठन और शक्ति से तरह तरह की सुविधा ले लेते हैं, और इस तरह से तरह तरह की वेतन वृद्धि ले लेते हैं । यही कारण आज मूल्य वृद्धि का है । यह बिल्कुल असत्य और अवास्तविक बात है और इसका खंडन करने की आवश्यकता नहीं है । सरकार द्वारा दिये गये आंकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि संगठित मजदूरों को अनिग का सूचक अंक 1971 में 100 था, तो 1972 में वह 99 था । 1973 और 1974 के बीच में हम समझते हैं मूल्यों में वृद्धि हुई और उससे यह और भी कम हो गया होगा ।

दूसरी तरफ, जिन इजारेदारों को ये रियायतें दे रहे हैं उनका प्रोफिट कितना बढ़ गया है वह एक बात से स्पष्ट हो जाता है कि मोनोपोली कमीशन ने जिन 75 घरानों का